चतुर्थ अध्याय

अमीश त्रिपाठी के उपन्यासों में मिथक – एक अवलोकन

मिथक और इतिहास की सहायता से अमीश त्रिपाठी ने भूत काल की यात्रा कर भविष्य की संभावनाओं को समझने का प्रयास किया है । उपनिषद महाभारत, रामायण एवं पुराण जैसे वेदों की पात्रों ने ब्रह्मांड के परिवर्तन की साक्षी बनी और इस कालचक्र की कसौटी में विजय होकर मनुष्य हृदय में आज भी जीवित है । समाजशास्त्र के कुछ पुस्तकों में कहा गया है कि मिथक और लोक कथा में बड़ा अंतर नहीं है । दोनों ही प्राकृतिक एवं यथार्थिक दुनिया का हिस्सा है।

अमीश त्रिपाठी का राम इसलिए अनोखा है क्योंकी इन्होंने राम को एक साधारण मनुष्य के रूप में इस उपन्यास श्रृंखला में चित्रित किया है । एक ऐसा मनुष्य जिनके कर्मों से हम जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं । इस युग में हमे ऐसी नेता की आवश्यकता है जो न केवल ईश्वर के रूप में धर्म का प्रचार करता है बल्कि मानवीय रूप धारण करके वे अधर्म से लड़ाई भी करता है । राम को बिना किसी दैवीय शक्तियों से एक आम इनसान के रूप में दिखाना ज़रूरी है, जो उन्हें मानवता की ओर करीब लाता है । आज के शास्त्रीय एवं तकनीकी पीढ़ी के कई लोग पुराण एवं मिथक पर विश्वास नहीं करते। इन्हें प्रेरित करने के लिए और उनके विश्वास हासिल करने के लिए एक ईश्वर एवं एक व्यक्ति की आवश्यकता है।

4.1. अमीश त्रिपाठी के राम कथा श्रंखला के उपन्यासों की कथावस्तु

अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित राम कथा श्रंखला इनकी दूसरी उपन्यास श्रंखला है । उनके प्रथम उपन्यास त्रय 'शिवजी' पर है । यह उपन्यासत्रय इतनी सफल हुई की वे भारत के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में एक बन गए । राम इक्षवाकु के वंशज, सीता मिथिला की योद्धा, रावण आर्यवर्त की शत्रु में राम, सीता और रावण की कथा है । इस श्रृंखला की चौथी उपन्यास 'लंका का युद्ध' में राम – रावण के अंतिम युद्ध पर केंद्रित है । इसमें हमे कई अनदेखी पहलुओं को देखने का मौका मिलता है ।

4.1.1. राम इक्षवाकु के वंशज : –

राम इक्षवाकु के वंशज, अमीश त्रिपाठी का चौथा उपन्यास एवं उनके रामायण श्रृंखला की पहली पुस्तक है । सीता की अपहरण पर राम की व्यग्रता से कहानी प्रारंभ होता

है । कथा तैंतीस साल पीछे चली जाती है । अयोध्या के राजा दशरथ और लंका के राजा रावण के बीच युद्ध से जिसमें अयोध्या नरेश हार जाता है । उसी दिन उनके पुत्र राम का जन्म भी होता है । आगे राम की किशोरवस्था और उनकी यौवन में घटनेवाली घटनाएँ जैसे गुरुकुल विद्या, वन में दानवों की संहार, सीता स्वयंवर और चौदह वर्ष के वनवास तक इसमें वर्णित है ।

अमीश त्रिपाठी के राम की छवि समकालीन पीढ़ी के लिए काफी उत्तम है । अमीश त्रिपाठी ने जिस प्रकार अपने विचारों को नई पीढ़ी के पाठकों के सामने रखा है, इसके कारण मूल रामायण का अवलोकन व्यवहारिक रूप से करने का अवसर मिला । यहाँ राम का जन्म एक नई शैली में प्रस्तुत किया है ।

राम के लिए 'राम' नाम उनकी माता कोशल्या ने चुना था जो छठे विष्णु का नाम था । 'विष्णुत्व' की उपाधि उन लोगो को दिया जाते थे जो अच्छाई के लिए लड़ते है और भगवान परशुराम छठे विष्णु थे । 'परश्' अर्थात् कुल्हाड़ी इनके नाम के साथ बाद में जोड़ा गया था क्योंकि कुल्हाड़ी परशुराम की हथियार थी । प्रसव पीड़ा में कोशल्या राम नाम की जाप करती रही। ऋषि वशिष्ठ ने राम के साथ 'चन्द्र' भी जोड़ा जो चन्द्रवंशियों के वंशज होने का प्रतिनिधित्व करता है । राम का मातृपक्ष चन्द्रवंशी और पिता सूर्यवंश के थे। इस प्रकार राम दोनों वंशों को एक साथ जोडनेवाला सेतु बन गए। रामचंद्र का अर्थ है 'चन्द्रमा का सुखद चेहरा'। दुर्भाग्य राम के इर्द-गिर्द एक साये की तरह मँडराते थे । राजा दशरथ का मानना था कि उनके जीवन की पहली हार का ज़िम्मेदार अभाग्य लेकर जन्मे राम है ।

रावण के साथ युद्ध में हार दशरथ को अत्यंत पीड़ा में डाल दिया। उस युद्ध से मिली छोट एवं घावों के निशान उनको अपने अपमान का याद दिलाते रहे। उन्होंने रानी कौशल्या के महल में जाना भी छोड़ दिया और मदिरा में धुत होकर अपने पीड़ा से भागने का प्रयत्न किया। कम समय में वह एक बलशाली योद्धा से कमज़ोर बूढ़े व्यक्ति बन गए। रावण के साथ युद्ध में हार केवल एक बार हुआ था लेकिन वे रोज़ अपने पराजय के दबाव में प्रतिदिन जूझते रहे।

अमीश त्रिपाठी ने रामायण को एक नए दृष्टिकोण से देखा है । दशरथ के हृदय में राम के प्रति द्वेष एक ऐसा मोड़ है जो हमे वाल्मीकि वा तुलसीदास के रामायण में देखने को नहीं मिलता। इसमें राम को एक संघर्ष भरी जीवन व्यतीत करनेवाला व्यक्ति बनाया न कि एक सुख समृद्धि के साथ पले बड़े राजकुमार। राम कड़ी मेहनत और अपने बलबूतों पर

ऊँचाई तक पहुँचे। अमीश त्रिपाठी ने रामायण में लायी ऐसे विशेष अंतर ने राम को लोगों की ओर निकट लाया। राम को अपनी परिवार से ज्येष्ठ पुत्र होने का विशेष अधिकार कभी प्राप्त नहीं होता। यहाँ लेखक ने समकालीन पीढ़ी की उपयुक्तता के अनुसार, राम की चरित्र का निरूपण किया है ।

अयोध्या के चारों राजकुमार गुरु वशिष्ट के गुरुकुल में जुड जाते हैं । छुट्टियों में जब बाकी के विद्यार्थी घर जाते थे, तब भी राम अपना पूरा समय गुरु वशिष्ट को समर्पित करते थे। माता सुमित्रा के निर्देश के अनुसार, लक्ष्मण और शत्रुघ्न उनके बड़े भाई के प्रति निष्ठावान रहते थे। लक्ष्मण राम को हर हाल में संरक्षण करने का शपथ लेता है । आम विद्यार्थियों जैसे जीवन बिताने के लिए एवं अपनी पहचान को छुपाए रखने के लिए चारों राजकुमारों को गुरुकुल वास के दौरान नए नाम के साथ जीना पड़ता है – सूरदास, वसु, पौरव, नालदुर्ग। उनके साथ साधारण छात्र जैसे व्यवहार होता था। उन्हें वह सभी कार्य वेसे ही करने पड़ते थे, जैसे अन्य छात्र करते थे।

गुरु वशिष्ट ने राम को एक सभ्य समाज को बनाए रखने के लिए आवश्यक नियमों से परिचित कराएँ। वशिष्ठ का मानना है कि कानून एक ऐसा बुनियाद है जिस पर जीवन शैली टिकी हुई है । चारों भाइयों में सबसे अध्ययन शील छात्र भरत थे। एक बार वशिष्ठ ने जीवन जीने की आदर्श मार्ग के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया कि सभी बने बनाए नियमों से मुक्त होकर अपने मन और कर्म की पूर्ण स्वतंत्रता से व्यतीत करना ही जीवन जीने का आदर्श मार्ग है ।

राम का शासन न्याय और समानता से भरा था जिसकी समकालीन समाज को आवश्यकता थी। आज इनसाफ, एक ऐसी लंबा राह है जो अनिश्चित है । कभी-कभी तो कोई व्यक्ति न्याय के लिए अदालत की दरवाजा खटखटाता है तो उसकी कार्यवाही और अंतिम सुनवाई में इतना देर होता है कि वह इंतजार करते-करते मर जाता है । यह एक लंबा, महंगा और एक जटिल प्रक्रिया बन चुका है । भ्रष्टचार भी ऐसे कमज़ोर कानूनी व्यवस्था का कारण बनता है । कानूनी मामलों में स्पष्टता का अभाव, पुनरावृत मुकदमे, सामाजिक असमानताएँ, जनता के बीच जागरूकता की कमी, नियमों के कमज़ोर कार्यन्वयन, पुलिस में संवेदनशीलता का अभाव ही कानून एवं न्याय प्रणाली के पतन का कारण है ।

अमीश त्रिपाठी के राम द्वारा कानून और उसके प्रवर्तन का एक सशक्त एवं उचित प्रणाली का प्रदर्शन इस उपन्यास में किया गया है । जब राम गुरुकुल से वापस लौटे तो उन्हें पुलिस विभाग सौंपा गया था जो भविष्य में राजा के सिंहासन पर बैठने वाले राजकुमार के लिए उपयुक्त जिम्मेदारी नहीं था। एक साल के अंदर राम की अधीन में पुलिस विभाग सकारात्मक परिवर्तन दिखाना शुरू किया। राम ने सबको नियम सिखाया। साधारण जनता को सरल भाषा में नियम के विविध पक्षों को समझाया । "राम द्वारा नगर व्यवस्था संभालने के साल भर बाद ही बेहतर परिणाम सामने आने लगे। उन्होंने मुख्य समस्या को पकड़ लिया था। अधिकांश लोग कानून व्यवस्था से अनजान थे।"[1]

रामायण में मंथरा एक धनी व्यवसाई महिला है जिसकी मन में राम के प्रति विद्वेष का भाव है । अपनी पुत्री की खूनी के लिए जो सज़ा राम में चुना, वह उससे असंतुष्ट थी। मंथरा की पुत्री रोशनी उन चारों भाइयों की मुंह बोली बहन थी। चारों रोशनी से बेहद प्रेम करते थे और रक्षा बंधन के दौरान उसकी सुरक्षा करने का प्रण भी लेते है । रोशनी एक चिकित्सक थी। बीमार लोगों की चिकित्सा करने के लिए वह एक गांव जाती है जहाँ रात को उस पर लोग हमला करते हैं और उसे मार डालते हैं । इस हमले की मुख्य अपराधी धेनुका एक नाबालिक होने के कारण कानून उसे सज़ा देने की अनुमति नहीं देती और कानून के पक्के समर्थक राम अपने भाइयों के लाख समझाने के बावजूद भी अपने फैसले पर अडिंग रहे। नियम के अनुसार धेनुका के अतिरिक्त अन्य गुनेकारों को फाँसी दी जाती है किंतु मुख्य अपराधी को मृत्यु की सज़ा न दिए जाने के कारण मंथरा के हृदय में राम के प्रति क्रोध की अग्नि जलना आरंभ हुआ।

राम धेनुका को कैद में रखता है । उसे मार देने की लोगों को आज्ञा एवं अनुरोध का राम ठुकरा देता है । मंथरा कैकेयी को बातों में फँसाता है और भरत को कैकेयी के नियंत्रण में लाता है । इसके बाद भरत षड्यंत्र से धेनुका को मार डालता है । भरत की इस हरकत से राम शर्मिंदगी महसूस करता है । "राम ने नीचे धेनुका के शरीर को देखा, फिर अपने भाई को, वह दो कर्तव्यों के बीच फँसे हुए थे।"[2]

---

[1] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 107

[2] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 158

एक बार राम अपने पिता दशरथ के साथ शिकार पर जाता है । कैकेयी राम को दशरथ की सुरक्षा के लिए उनके साथ भेज देती है । शिकार के दौरान एक तेंदुआ की जानलेवा हमले से राम दशरथ को अत्यंत साहस से बचाता है और खुद घायल हो जाता है । इस हादसे के कारण पिता और पुत्र के बीच की दूरियाँ मिट जाती है और दशरथ राम को अयोध्या के भविष्य राजा घोषित करते है ।

विश्वामित्र के अयोध्या के आगमन राम की जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित होता है । जैसे ही वे अयोध्या आए बिना किसी संकोच के उन्होंने अपने माँग रखा कि वह राम को अपने साथ ले जाने आए हैं । विश्वामित्र के आश्रम को राक्षसों से खतरा होने के कारण उन राक्षसों से आश्रम वासियों की सुरक्षा करने के लिए उन्हें राम की आवश्यकता थी और इसीलिए राम को अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव रखा। दशरथ यह सुनकर बेचैन होने लगे। वे विश्वामित्र जैसे महान संत की माँग को ठुकराना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने सेनापति मृगत्स्या के नेतृत्व में पूरी अयोध्या सेना को भेजने का सुझाव रखते हैं, जिसे विश्वामित्र मना कर देते हैं । विश्वामित्र लक्ष्मण को भी उनके साथ भेजने का इच्छा प्रकट करते है।

राम और लक्ष्मण अरिष्टनेमी के साथ विश्वामित्र के आश्रम में परेशानियाँ करनावाली राक्षसों की खोज में निकल जाते हैं । राम उन राक्षसों की नेता ताड़का एवं उन राक्षसों को मारने की बजाय उन्हें लेकर विश्वामित्र के आश्रम में जाते हैं । असुर वंश को उस जगह को छोड़कर वायुपत्रों के साथ मिलकर काम करने के लिए राम उन्हे मना लेते हैं । बिना खून के छींटे गिरे राम विश्वामित्र और आश्रम वासियों की सबसे बड़ी परेशानी को खत्म कर देते हैं । राम विश्वामित्र से कहते है–"लेकिन यह सवाल असंगत है, गुरुजी वास्तविक सवाल यह है कि इन्हें क्यों मार देना चाहिए? इन्होंने कौन सा कानून तोड़ा है ?

उन्होंने बार–बार मेरे शिविर पर हमला किया है। लेकिन उन्होंने किसी की हत्या नहीं की। उन्होंने बस पिछली बार आपकी बाड़ का कुछ हिस्सा जला दिया था और इन्होंने आपके कुछ मामूली उपकरण तोड़ दिए हैं । क्या किसी भी विधि के अंतर्गत इन अपराधों की सजा मीत है? नहीं अयोध्या का कानून, जिसका मैं हमेशा पालन करता हूँ, स्पष्ट करता है कि अगर किसी कमज़ोर ने कोई कानून तोड़ा है, तो उनकी रक्षा करना ताकतवर का कर्तव्य है ।"[3]

---

[3] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 187

इसके पश्चात विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को मिथिला ले जाते हैं। मिथिला की प्रधानमंत्री पद पर सीता को विराजित देख लक्ष्मण चौंक जाता है। कैसे एक स्त्री पूरी देश की जिम्मेदारी को संभाल सकती है। किंतु राम लक्ष्मण का समझाते हैं कि इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। स्त्री पुरुष के समान है, उनमें काम करने की क्षमता पुरुष की तुलना में कम नहीं है। राम एक पत्नित्व अर्थात एक ही बार विवाह करने की प्रथा में विश्वास रखते हैं।

मिथिला के बाज़ार में घूमते वक्त दोनों भाई सीता को क्रोधी जनता के आक्रोश से एक चोर की सुरक्षा करते हुए देखते हैं। कानूनी तौर पर उस चोर को दंड देने के लिए कठिन प्रयत्न कर रही सीता को देखकर राम प्रभावित हो जाते हैं। उनका सिर सीता के सामने झुक जाता है। "लड़के का हाथ पकड़कर, सीता तेज़ कदमों से राम और लक्ष्मण की ओर बड़ीं। लक्ष्मण ने राम की कोहनी पकड़कर उन्हें एक तरफ खींचने की कोशिक की लेकिन राम तो किसी दूसरी ही शक्ति के नियंत्रण में थे। भावविहीन स्ट जड़ शरीर, अपलक टकटकी और सांसें सामान्य हलचल मात्र हवा से उड़ते उनके अंगवस्त्र में थी जो उनकी स्थिरता में अतिरंजित प्रतीत हो रही थी। पूरी तरह से काबू खोकर, राम का सिर मानो खुद ब खुद झुक गया।"[4] जब राम को सीता के स्वयंवर में भाग लेने के आदेश विश्वामित्र देते हैं तो पहले तो उन्हें हाँ करने में संकोच हुआ था किंतु सीता की वीरता और बहादुरी देखने के बाद राम की 'ना' 'हाँ' में बदल जाता है।

राम और सीता की पहली मुलाकात में सीता राम से पूछती हैं कि आयोध्या जैसे शक्तिशाली देश कि युवराज को मिथिला जैसी छोटी देश के साथ संबंध जोड़ने की भला क्या आवश्यकता है ? क्योंकि यह विवाह राजनीतिक तौर पर अयोध्या के लिए लाभदायक नहीं था। राम सीता से भिन्न राय रखने वाले व्यक्ति थे। उनका यह मानना था कि विवाह का उद्देश्य एक राजनीतिक गठबंधन से परे है। राम की सच्चाई और सोच से सीता बहुत प्रभावित हो जाती है। सीता स्वयंवर में रावण भी ज़बरदस्ती भाग लेते हैं और अराजकता पैदा करने की कोशिश करते हैं। रावण को विश्वामित्र स्वयंवर में हिस्सा लेने से रोकता है तो वह गुस्से से वहाँ से चले जाते हैं। स्वयंवर के लिए आयोजित प्रतियोगिता राम जीत जाते हैं और राम–सीता के साथ–साथ लक्ष्मण–उर्मिला का विवाह भी संपन्न हो जाता है।

---

[4] अमीश त्रिपाठी – राम इक्षवाकु के वंशज – पृ. स 216

मिथिला पर रावण की बड़ी सेना की आक्रमण को रोकने के लिए राम को असुरास्त्र के प्रयोग करने के लिए विवश करता है । असुरास्त्र पूरे लंका सेना को एक ही बार में उन्मूलन करने का शक्ति रखता है । प्रभु रुद्र द्वारा बनाए गए नियम के कारण सीता इस अस्त्र के प्रयोग करने से खिलाफ थी। इस नियम के अनुसार इस प्रकार के खतरनाक अस्त्र का प्रयोग करना मना है । जो इस नियम को तोड़ता है, उन्हें चौदह साल की वनवास की सज़ा दी जाएगी और दूसरी बार तोड़ने पर मृत्युदंड दिया जाएगा।

राम विश्वामित्र की बातों में आकर असुरास्त्र का प्रयोग करते हैं जिससे लंका की सेना का सर्वनाश हो जाता है । राम विश्वामित्र द्वारा बनाए षड्यंत्र का मोहरा बन जाता है । असुरास्त्र का प्रयोग करने की दंड हेतु राम का चौदह वर्ष की वनवास में जाना पड़ता है । इस यात्रा में सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ देते हैं।

वन में राम, सीता और लक्ष्मण की सुरक्षा के लिए जटायु और उनकी सेना भी मौजूद थे । वन में रहने की दौरान उन्हें कई सारे खतरों की सामना करना पड़ता है । रावण का सौतेला भाई और बहन, विभीषण और शूर्पणखा से उनकी मुलाकात होती है । राम दोनों को भले समझकर जंगल में उनके साथ अतिथि के रूप में रहने की अनुमति देते हैं । पर शूर्पणखा की नियत सही नहीं थी वह सीता पर हमला करने की कोशिश करती है जिसके कारण लक्ष्मण उसकी नाक काँटता है । राम, सीता और लक्ष्मण को वन छोड़कर जाना पड़ता है क्योंकि जटायु उनसे कहता है कि रावण अपनी बहन की अपमान का बदला लेने आ सकता है ।

तीस दिन वन में घूमने के पश्चात वे एक सुरक्षित स्थान पर ठहर जाते हैं किंतु रावण बहुत ढूँढने के बाद उनको खोज निकालते हैं । राम और लक्ष्मण की गैरमौजूदगी में जटायु को मारकर रावण सीता की अपहरण करके पुष्पक विमान में सीता को लंका लेकर जाते हैं ।

4.1.2. सीता मिथिला की योद्धा : -

2017 में प्रकाशित सीता मिथिला की योद्धा, राम इक्ष्वाकु के वंशज के बाद प्रकाशित राम कथा श्रंखला के उपन्यास होने के बावजूद भी यह उसका अगली कड़ी नहीं है । लेखक एक साक्षात्कार में कहते हैं कि यह उपन्यास पाठकों को वापस अतीत में ले जाते हैं और दोनों उपन्यास की समाप्ति एक ही बिंदु पर होती है । अर्थात सीता की रावण द्वारा अपहरण होनेवाली प्रसंग पर यह दोनों उपन्यास अंत होता है । इस उपन्यास में सीता एक

योद्धा और स्त्रीवाद के प्रतीक के रूप में चित्रित है। राम, सीता और रावण के जन्म से लेकर रावण द्वारा सीता के अपहरण तक की कथा को 'मल्टी लिनियर' आख्यान पद्धति का प्रयोग करके लेखक ने इस उपन्यास श्रंखला में प्रस्तुत किया है। तीनों पुस्तकों में राम सीता और रावण के व्यक्तित्व व्यक्तिगत जीवन यात्रा को दर्शाया है। रामचंद्र श्रृंखला के इस दूसरी पुस्तक में अमीश त्रिपाठी ने सीता को एक रक्षक और एक देवी के रूप में चित्रित किया है जो यह दोनों कर्तव्य निभाने के लिए आदर्श पात्र है। लेखक ने इस उपन्यास के ज़रिए राजनीति की क्षेत्र में सीता की क्षमता को उजागर किया है। इस उपन्यास की सीता केवल एक योद्धा ही नहीं अपितु एक बहादुर राजनीतिज्ञ और एक शासक भी है। अमीश त्रिपाठी ने सीता को एक जटिल व्यक्तित्व वाली स्त्री पात्र के रूप में दिखाया है। एक योद्धा से भिन्न एक राजनीतिज्ञ के रूप में सीता को पेश करके अमीश जी ने सीता को अपनी खुद की कहानी बनाने में मदद की है।

सीता मिथिला की योद्धा में अमीश त्रिपाठी ने सीता की पात्र का इस प्रकार पुनः सृजन किया जिसके बरसों से समाज को ज़रूरत थी। अमीश त्रिपाठी की सीता तो युद्ध भूमि में लाठी और छूरी चलाने वाली, शत्रुओं के सिर तोड़ने वाली एक प्रबल योद्धा थी और अपनी कुशलता और प्रशिक्षण से एक सफल राजनीतिज्ञ और एक महान नेता भी बनी।

कहानी की शुरुआत होती है केले के पत्ते इकट्ठे करते हुए सीता और मकरंत नामक मलय पुत्र से जो राम और लक्ष्मण से काफी दूर थे। लंका की सेना मकरंत को बाण चलाकर मार डालते हैं। सेना की बातों से यह साफ हो जाते हैं कि वह विष्णु को पकड़ने आए थे अर्थात सीता, जिसे विश्वामित्र ने विष्णु के पद के लिए चुना था। सीता को उनकी बात सुनकर क्रोध आती है किंतु वह यह जानती थी कि यह क्रोध में आकर बहादुरी दिखाने का वक्त नहीं था। हालात उसकी काबू में न होने के कारण वह चुप चाप वार करने का निर्णय लेती है। "आँखों का कोई काम नहीं था यहाँ। उन्हें अपने कानों पर ही भरोसा करना था। ऐसे महान धनुर्धर थे, जो आवाज सुनकर ही तीर चला सकते थे। लेकिन आवाज के अंदाज़े पर चाकू फेंकने वाले बहुत कम थे। सीता उन दुर्लभ योद्धाओं में से थीं।"[5]

लंका के सेनापति खारा सीता की संरक्षक जटायु को पकड़ लेता है। सीता खारा पर वार करने में सफल हो जाती है किंतु वह जटाय को बचाने में असफल हो जाती है। सीता

---

[5] अमीश त्रिपाठी – सीता मिथिला की योद्धा – पृ. स 4

को बेहोश करके रावण उसे पुष्पक विमान में डालकर लंका की ओर लेके जाते हैं। राम और लक्ष्मण की आगमन पर घायल जटायु उन्हें सीता की रावण द्वारा अपहरण के संबंध में सूचित करता है और मर जाता है।

कहानी अठतीस साल पीछे चली जाती है। मिथिला के राजा जनक और उनकी पत्नी सुनेना निसंतान थे। मिथिला की प्राकृतिक संसाधन समाप्त होने के कारण देश को चलाने के लिए उन्हें कृषि की सहारा लेना पड़ा। जनक और सुनैना एक यात्रा के दौरान भेड़ियों की झुंड से लड़ रही गिद्ध से उनका सामना होता है। वह गिद्ध शिशु की सुरक्षा कर रही थी। "सुनयना ने ध्यान से देखा। ये लड़ाई न्यायपूर्ण नहीं थी। वहां चिल्लाते हुए और आपसी सामंजस्य से गिद्ध पर हमला करते हुए छह भेड़िये थे। लेकिन बहादुर पक्षी जमीन पर डटा खड़ा था, उन्हें बार-बार पीछे धकेलते हुए। हमलावर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। एक भेड़िये ने अपने पंजों से गिद्ध पर वार करके उसे खून से लथपथ कर दिया।"[6] इस लड़ाई में गिद्ध मर जाता है। सुनैना और जनक उस बच्ची को अपनाते हैं और उसे सीता नाम देते हैं।

सीता बड़ी हो जाती है। उसे इस बात की परिपूर्ण ज्ञान थी कि वह जनक और सुनैना की गोद ली गई पुत्री है। आठ साल की उम्र में सीता वेष बदलकर बिना माता-पिता को बताएँ गंदी बस्तियों के दर्शन करने जाया करती थी। ऐसे ही एक यात्रा में बस्ती की कुछ लड़के सीता को परेशान करते हैं, जो उसकी अँगूठी छीनकर उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। तब एक लड़की सीता को बचाती है जिसका नाम समीची थी। सीता समीची को लेकर महल वापस आती है और बाद में समीची महल की संरक्षक के रूप में काम करती है।

मिथिला की पड़ोसी देश संकाश्य कि राजा कुशद्वज, मिथिला और संकाश्य को एक करके उस पर राज करना चाहते थे। किंतु सभी इसके विरोध में थे। शाही मोहर की दवा देकर कुशद्वज अपने हक को एलान करने का प्रयत्न करता है पर सीता इन इरादों पर पानी भेरते हुए उस शाही मोहर को तोड़ देती है। इसका परिणाम स्वरूप सीता को अपने परिवार से दूर श्वेतकेतु के गुरुकुल में जाकर रहना पड़ता है। वहाँ उसे एक राजकुमारी के लिए आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया। सीता की ज्ञान वृद्धि के लिए कई पाठ पढ़ाए गए। सीता को अपनी हरकत के बारे में सोच कर बहुत बुरा लगा और खुद को सज़ा देने के लिए

[6] अमीश त्रिपाठी - सीता मिथिला की योद्धा - पृ. स 19

अपनी माँ से दूर रहने लगी । इस बीच सुनैना ने एक पुत्री को जन्म देती है जिसका नाम है उर्मिला ।

गुरकुल में सीता का नाम 'भूमि' थी । वहाँ के सभी लोग उसे इस नाम से पुकारते थे । गुरुकुल के अन्य विद्यार्थी जनक के मज़ाक उठाते थे और सीता की सौतेली बेटी होने की बात को लेकर उसे चिढ़ाते थे । सीता की स्वभाव में सबसे आकर्षक बात यह थी कि वह दयालु भी थी और प्रफुल्लित भी। अपने पिता और उसकी शासन का निंदा करने वाले लोगों को उसने हमेशा ही मुँह तोड़ जवाब दिया।

सीता जब तेरह साल की हुई तब महर्षि विश्वामित्र आश्रम का संदर्शन किया। सीता एक सच्ची शासक थी जिसने कभी लोगों के बीच भेदभाव नहीं रखा। जब विश्वामित्र और अन्य मलयपुत्र श्वेतकेतु के आश्रम में आए तो उनके साथ नाग जाति के व्यक्ति जटायु भी आए थे। नाग जात होने के कारण कोई उनका सम्मान नहीं करते थे जिनकी वह हकदार थे किंतु सीता ने ऐसा नहीं किया। उसे इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ा कि वह एक नाग था। लोगों की सोच से वह बेफिक्र थी। सीता जानती थी कि जब वह शिशु थी तो एक गिद्ध ने उसकी रक्षा किया था इसीलिए गिद्ध के सिरवाले जटायु का उसने देखभाल किया। समाज द्वारा कृत्सित, शारीरिक तौर पर विकृत समुदाय के अंक जटायु द्वारा सामने करने वाली पक्षपात किस हद तक प्रबल था, विश्वामित्र को इस बात का पूर्ण ज्ञान था। जब आश्रम में किसी ने भी जटायु को भोजन देने पर ध्यान नहीं दिया तब सीता उनकी भोजन हाथ में लिए उनके पास जाती है।

सीता की स्वभाव से विश्वामित्र बहुत प्रभावित हो जाते हैं और उसे तभी विष्णु के पद के लिए चुनते हैं। उसी समय अयोध्या की राजगुरु वशिष्ठ ने भी राजकुमार राम को अगले विष्णु के पद के लिए चुनते है। "यह पद उन व्यक्तियों को दिया जाता है जो लोगों को नए जीवन की राह दिखाते है, जो अच्छाई की प्रचारक और धर्म के संरक्षक है।"[7]

सीता की माँ सुनयना की तबीयत बिगड़ती जा रही थी इसलिए वह सीता से मिलने उसकी गुरुकुल चली जाती है। अपनी माँ की बिगड़ती हुई स्वास्थ्य की खबर ने सीता की दुनिया को हिला कर रख दिया। सुनयना ने सीता को वापस महल आने के लिए दरख्वास्त किया। सीता ने सुनैना से इस बात का उल्लेख नहीं किया कि उसे विष्णु के पद के लिए चुना

[7] नीरजी. टी. के, डॉ. जी शांति – नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की दृष्टिकोण में सीता, केरल ज्योति – पृ.स 22

गया था। अपनी माँ की बीमारी के बारे में जानकर अपनी छोटी बहन की ख्याल रखने की खातिर सीता सुनयना के साथ वापस मिथिला चली जाती है।

सोलह साल की उम्र में सीता मिथिला की प्रधानमंत्री बन जाती है । जैसे ही वह उस पद पर बैठती है, वह अपने देश में सकारात्मक सुधार लाने के लिए नए कानूनों को लागू करती है। गृह निर्माण शैली और व्यवसाय से लेकर नगर के रक्षा तक सभी काम वह बखूबी संभालती है । मिथिला को अपनी पुरानी प्रौढ़ एवं प्रसिद्धि पुनः प्राप्त कराने के लिए वह मेहनत करती है । "सीता ने नगर के केंद्र में एक व्यवस्थित बाज़ार का प्रबंध कराया। जहाँ एक जैसे, स्थायी खोमचे बनाकर विक्रेताओं को दिए गए, इससे स्वच्छता और अनुशासन मुमकिन हो सका। बिक्री बड़ी छाती चौड़ी और बर्बादी में कमी आई इससे कीमतों के चक्र में बढ़ोतरी होकर व्यवसाय में उन्नति हुई।"[8]

सीता पर जानलेवा हमला होता है। कुछ लोग उसकी हत्या करने का प्रयत्न करता है। शत्रु द्वारा अपने रथ के साथ छेड़छाड़ करने के बावजूद भी सीता उस दुर्घटना से बच जाती है। सीता को पता चल जाती है कि उसकी चाचा जी कुशद्वज के पूर्व प्रधानमंत्री सुलोचन ने उस पर यह हमला कराया था। सुलोचन की हत्या करने की ज़िम्मेदारी अरिष्ठनेमी को सौंपा जाता है। अरिष्ठनेमी गुरु विश्वामित्र के खास व्यक्ति और मलयपुत्रों के सेनापति, जिसने सीता की सुरक्षा का भार नहीं संभाला अरिष्ठनेमी को सीता की विष्णु के पद के लिए चुने जाने की विषय पर मन में जो आशंका थी वह अपने शत्रु और प्रतिबंधों को खत्म करने की सीता के निर्णय को देखने पर चला जाता है। उन्हें यह एहसास हुआ कि सीता सही मायने में विष्णु की उपाधि को प्राप्त करने में योग्य थी।

जब सीता मलय पुत्रों की राजधानी अगस्त्यगूढ़ घोड़ा का संदर्शन किया तब वहाँ के लोगों ने सीता को एक देवी की तरह सत्कार किया। विष्णु पद के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए सीता ने कई यात्राएँ की और वापस मिथिला लौट आती है।

राम और सीता की विवाह हो जाती है। "सीता को राम और सीता की विवाह कराने का और अपने प्रतिद्वंदी वशिष्ठ पर जीत हासिल करने का विश्वामित्र की योजना के संबंध में पता चलती है किंतु जब वे राम की बहादुरी के किस्से सुनती हैं तब उन्हें विश्वास हो जाती है

---

[8] नीरजी. टी. के, डॉ. जी शांति – नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की दृष्टिकोण में सीता, केरल ज्योति – पृ.स 22

कि राम उनसे भी अच्छा विष्णु बनेंगे। सीता की हृदय में ईर्ष्या का भाव नहीं पनपता। वह सिर्फ अपने देश और देशवासियों की शाँति और भलाई चाहती थी ।"[9]

राम और सीता की विवाह की पश्चात राम इक्ष्वाकु के वंशज और सीता मिथिला की योद्धा की कथा सार में कोई अंतर नहीं है। इनमें अंतर सिर्फ इतना है कि राम इक्ष्वाकु के वंशज के मुख्य पात्र राम होने के कारण राम की दृष्टिकोण में हम कहानी पढ़ते हैं और सीता मिथिला की योद्धा में पूरी कथा सीता के चारों ओर घूमती है । इसमें मुख्य पात्र केवल सीता है और राम इसमें केवल एक गौण पात्र है ।

सीता उन लोगों में से नहीं थी जिसकी जीवन में कोई लक्ष्य न हो । सीता ने अपनी परिवेश पर ध्यान दिया और उसे मिली शिक्षाओं पर सदैव विचार किया जो उसकी युवावस्था में एक मज़बूत बुनियाद बनी। सीता नौ साल की थी, जब उसने नकली मोहर तोड़कर अपनी माँ को लोगों के सामने बेइज्जत होने से बचाया। कुशद्वज का सुनयना को गुमराह करने की पद्धति पर सीता ने पानी फेर दिया । यह उसकी निडरता एवं ज़िम्मेदारी को प्रदर्शित करता है । सीता एक कोमल स्त्री होने पर भी ज़रूरत के समय पर खुद के बचाव के लिए प्रखर भी होना वह जानती थी।

4.1.2 रावण – आर्यवर्त का शत्रु : –

राम कथा श्रंखला की यह तृतीय उपन्यास सीता की वन से अपहरण तक रावण के जीवन का चित्रण किया गया है । रावण की व्यक्तित्व को गहरी रूप से समझने का प्रयत्न इस उपन्यास में हुआ है ।

अमीश त्रिपाठी की दृष्टिकोण में समकालीन भारत की अवधारणा हमें इस उपन्यास में देखने को मिलता है । रावण भारतीय पुराण का एक ऐसा जटिल नकारात्मक पात्र है, जिसको समझना कठिन है । अमीश त्रिपाठी ने एक अनदेखी खलनायक के रूप में उन्हें दर्शाया है । रामायण जैसा एक पौराणिक कथा की पुनः कथन की शैली जो अमीश जी ने अपनाया, इसने पाठकों को आश्चर्यचकित किया है । इसके कारण हर पाठक को रावण को अपनी एक अलग एवं अनोखी दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्राप्त होगा।

समीची द्वारा मलयपुत्र की हत्या करते हुए उपन्यास की शुरुआत होती है । समीची जो सीता की मित्र एवं मिथिला की संरक्षक थी, असल में रावण की अनुयाई थी उसकी

---

[9] नीरजी. टी. के, डॉ. जी शांति – नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की दृष्टिकोण में सीता, केरल ज्योति – पृ.स 22

निष्ठता सीता की तरफ नहीं बल्कि रावण की ओर थी। रावण की सेना बेहोश सीता को बाँधकर पुष्पक विमान में लेटाती है । उस विमान में रावण और कुंभकर्ण चढ़ जाते हैं । यात्रा के दौरान दोनों सीता की युद्ध कौशलता की प्रशंसा करते हैं । सीता की चेहरा देखने के लिए बेताब रावण धीरे-धीरे बेहोश सीता की चेहरा देखते हैं । कुंभकर्ण और रावण सीता की चेहरा देखकर एकदम चौंक जाते हैं ।

कहानी चालीस साल पीछे चली जाती है जब रावण छेः साल के थे। राम कथा के दो मुख्य पात्र राम और सीता का जन्म तब नहीं हुआ था। शैवावस्था में ही रावण दृढ़ आत्मविश्वासी थे। रावण ऋषि विश्रवा के पुत्र थे। सोमरस की पान करने के कारण वह सत्तर साल की उम्र में भी युवा जैसे दिखते थे। कई दशकों में ऋषि विश्रवा द्वारा किए गए कार्य ने उन्हें महान वैज्ञानिक, आध्यात्मिक शिक्षक, और प्रभावशाली विचारक के रूप में खुद को प्रतिष्ठित करने में मदद की। एक ज्ञानी पिता के पुत्र होने के कारण रावण भी एक ज्ञानी थे। सबको लगता था कि रावण भी अपने पिता के मार्ग पर चलकर एक बहुत बड़ा ऋषि बनेगा ।

रावण वैज्ञानिक प्रयोगों के नाम पर जानवरों के शरीर का चिरफाड करते थे । ऐसे ही एक वैज्ञानिक प्रयोग के दौरान रावण की नज़र देवी कन्याकुमारी पर पड़ते हैं । "भारत के अनेक हिस्से में कुछ विशिष्ट कन्याओं का देवी की रूप में पूजा होती थी । ऐसा माना जाता था कि इन कन्याओं के भीतर देवी वास करती है । किंतु उस कन्या की रजस्वला होने के पश्चात उसकी पूजा नहीं होती। लोगों का मानना था कि उसके बाद देवी किसी और कन्या की शरीर में चली जाती थी ।"[10] कश्मीर के पवित्र अमरनाथ गुफा से वापस वैद्यनाथ जाने की यात्रा के दौरान कन्याकुमारी ऋषि विश्रवा के आश्रम में जाती है । यात्रा की थकान के कारण वे कुछ दिन वहाँ रुक जाती है । कन्याकुमारी को देखते ही रावण उनसे आकर्षित हो जाते हैं । कन्याकुमारी की शाँत प्रकृति ने रावण को अधिक बेचैन किया। उनकी नाभी पर जो बैंगनी रंग की उपांग थी, उसे वह कमरबंद से छुपाते हैं । रावण को कन्याकुमारी के समक्ष अपनी कमियों का एहसास होता है जो उन्हें शर्मिंदा करता है । कन्याकुमारी रावण के हाथ से ज़मीन पर गिरी चाकू को उठाकर कहती हैं "तुम इससे अच्छा कर सकते हो।"[11] कन्याकुमारी वह पहले इंसान थी जिसने रावण को दयनीय या घृणा की नज़र से नहीं देखा था। इन्हीं कारणों से रावण की हृदय में

---

[10] नीरजी. टी. के, डॉ. जी शांति - आधुनिक रावण की छवी, शोध दिशा - पृ. स 105

[11] अमीश त्रिपाठी - रावण आर्यवर्त का शत्रु - पृ. स - 24

कन्याकुमारी की प्रति अटूट आस्था एवं प्रेम की भावना जागती है। कई साल बीतने पर भी रावण कन्याकुमारी द्वारा कहे गए शब्दों को अपने सीने में जीवित रखते हैं।

रावण की माँ कैकेसी के गर्भवती होने के कुछ दिन पहले ऋषि विश्रवा आश्रम छोड़कर यात्रा पर प्रस्थान होते हैं। ऋषि विश्रवा रावण की नाभि के बैंगनी उपांग से शर्मिंदा थे क्योंकि वह उपांग उस बात का सबूत था कि एक रावण नाग जात का बच्चा था। वे समाज में अस्वीकृत थे। उनको समाज घृणा से देखते थे। एक ऋषि के पुत्र का नाग रूप में जन्म होना विश्रवा के लिए बेइज्ज़ती थी। इसीलिए रावण को कभी उनके पिता के प्रेम और परिचालन प्राप्त नहीं हुआ।

रावण इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि उन्हें जल्द एक भाई या बहन मिलने वाला है। उन्होंने अपनी माँ की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ा। जिस दिन शिशु का जन्म हुआ उस दिन कैकेसी को काफी दर्द से गुज़रना पड़ा। बारह घंटे के प्रेसव वेदना के बाद कैकेसी एक लड़के को जन्म दिया। किंतु उसे भी शरीर में ऐसी विकृतियों थी जो उसे नाग जात का बच्चा बनाता है। कैकेसी के देखभाल के लिए उसकी पास रुकी दाई यह देखकर चौंक जाती है और बच्चे को मारने की सलाह देती है।

शिशु के कान में विचित्र से गाँठि थी, जिसके कारण उसकी खान घड़े जैसे लग रहा था। उसके कंधो पर उभार थे, जैसे दो छोटी अलग बाँह हो। रावण ने अपना कमरबंद निकालकर उस दाई को अपनी नाभि का उपाँग दिखाते है और वह एकदम चौंक जाती है। रावण तुरंत उसके हाथ से अपने भाई को छीन लेते हैं और उसे मार देते हैं। बाहर लोग इकट्ठा हो रहे थे इसीलिए रावण अपने भाई और माँ को लेकर अपने मामा मारीच के साथ वह जगह छोड़कर भाग जाते हैं। कैकेसी और मारीच के माता-पिता, अपने पुत्री के कोख से एक नाग बच्चे का जन्म होने की खबर सुनकर ही उन्हें तिरस्कार कर दिए थे। इसीलिए उन्हें भिक्षुओं की तरह गलियों में अपने जीवन गुज़ारना पड़ा। "आर्यावर्त ने एक प्रतिभाशाली व्यक्ति को केवल उनकी शारीरिक विकृतियों के कारण उन्हें अस्वीकार किया और आगे चलकर रावण इस आर्यावर्त की सबसे बड़ी शत्रु बन गए।"[12] रावण और उनके परिवार चिल्का नदी के तट के एक छोटी सी शहर में जाकर रहते हैं। यह नदी व्यापार कार्य में काफी सहायक थी।

---

[12] नीरजी. टी. के, डॉ. जी शांति - आधुनिक रावण की छवी, शोध दिशा - पृ. स 105

सप्त सिंधु के कई वर्गों में आम लोगों और शासको परिवार व्यापक भ्रष्टाचार के कारण वैश्यज जाति के खिलाफ हो गए। व्यापार गंभीर रूप से प्रतिबंधित तथा व्यापारियों को हर स्तर पर गैर–वैश्य अधिकारियों से अनुमति लेना पड़ता था। भ्रष्टाचार कम करना तो दूर, अधिकारीयों ने लोगों से रिश्वत लेना शुरू किया। अंत में सभी सप्त सिंधु व्यापारियों को लंका के चालाक शासक एवं व्यापारी कुबेर का शरण लेना पड़ा। कुबेर ने सप्त सिंधु के सम्राट के साथ समझौता किया कि वह उनके सभी व्यवसायिक उद्यमों को अपने नियंत्रण में करके उन साम्राज्यों को कमाई का बड़ा प्रतिशत उनको समर्पित करेंगे। यह व्यापारियों का काम आसान नहीं किया। कुबेर ने मुनाफा घटाकर अधिकतम कमाई की। कालिंग सप्त सिंधु के वह एक मात्र देश थे जो कबीर के साथ इस व्यवसाय में हाथ नहीं जोड़ा था। देश भर में व्यापार ज़ख्त हो गया था और चिलका में तेज़ रफ्तार से बढ़ रहा था। कलिंग के शासक ने बंदरगाह को नियंत्रित किया। वैश्य के लिए जो विरोध भावना थी वह कालिंग में भी फैलने लगा। सप्त सिंधु की सम्राट एवं अयोध्या के राजा दशरथ के साथ सभी हाथ मिलाना चाहते थे क्योंकि वह अत्यंत शक्तिशाली थे।

कुछ समय बाद सप्त सिंधु के अन्य साम्राज्यों की तरह कलिंग को भी कर एवं उससे संबंध नियमों का पालन करना पड़ा था। सप्त सिंधु के तस्करी का माल बाहर की देश में निर्यात होना शुरू हुआ। रावण और मारीच जैसे ही सप्त सिंधु पहुँच गए, वे मज़दूरों के भेस में काम करना शुरू किए। एक तेज़ नौजवान और एक कुशल नाविक जो खतरनाक स्थितियों में भी ज़ोखिम लेकर वस्तुओं की तस्कर करने के लिए तैयार व्यक्ति के रूप में रावण की ख्याति बढ़ने लगी।

रावण और उनके साथी एक क्रकचबाहू को लूटने का फैसला करते हैं। एक महीने बाद रावण और उनके साथी गोकर्ण के लिए निकालने की तैयारी करते हैं। रावण को मना कर इस लूट में कुंभकर्ण भी निकल जाते हैं। रावण, मारीच अकंपन और कुंभकर्ण चिलका नदी के केंद्र में नलबन के छोटे से द्वीप और पोत की प्रगति की देखरेख कर रहे थे। रावण और उनकी सेना का क्रकचबाहू से एक गुलाबी रंग की महंगी हीरा चुराते हैं। रावण की सेना क्रकचबाहू के महल में घुसकर सोने के भारी संदूक निकाल कर बाहर लेकर गए। क्रकचबाहू और रावण की सेना के बीच में युद्ध हुआ किंतु वे वहाँ से अपने घोड़े पर चढ़ कर निकल जाते हैं।

रावण उनकी सेना के साथ जोत पर पहुँच जाते हैं। क्रकचबाहू के एक धनुर्धर रावण की घोडे के पैर में तीर चलाता है। तीर घोड़े की घुटने में लग जाता है और घोड़ा गिर जाता है। चौकन्ने रहने के कारण रावण घोड़े के जमीन में गिरने से पहले ही उससे उतर जाते हैं। खुद को संभालने के बाद रावण उस हीरे को अपनी कमर में छुपा लेते हैं और घोड़े की तरफ भागते हैं उन्हें जल्द ही वहाँ से निकल पर पोत में उनकी प्रतीक्षा कर रही कुंभकर्ण के पास पहुँचना था। वापस मुड़ के जाते वक्त रावण दूर से कन्याकुमारी को देखते हैं। अपने बचपन के प्यार को देखकर रावण दंग रह जाते हैं। रावण वहाँ से लौट के आने के लिए मना कर देते हैं। कुंभकर्ण रावण का वचन देता है कि कन्याकुमारी को ढूँढने के लिए वह वापस आएँगे और अंत में रावण मान जाते हैं।

रावण वेदवती की चित्र बनाए करते थे। कुंभकर्ण जब पहली बार वेदवती को देखा तो वह आश्चर्यचकित हो जाता है क्योंकि रावण, जिसने वेदवती को उनके कन्या रूप में ही देखे थे, उन्होंने एक महिला बनी वेदवती के चित्र बिल्कुल उसी तरह बनाए जैसे वह वास्तविक जीवन में दिखती हो।

कन्याकुमारी वेदवती नाम से टोड़ी गाँव एक साधारण स्त्री के रूप में जीवन व्यतीत कर रही थी। वह नदी में बाँध बनवाने में ग्रामीणों की सहायता कर रही थी और साथ ही उनके और जमींदारों के बीच संतुलन बनाए रखने में भी सहायता कर रही थी। वेदवती एक विवाहित स्त्री थी जिसके पति का नाम पृथ्वी था और वह गर्भवती भी थी। रावण वेदवती से व्यापारी के भेस में मिलते हैं। किंतु कुछ समय बाद वेदवती रावण को पहचान लेती है। उनके बीच कर्म के दर्शन एवं जीवन में पुण्य कार्य करने से मिलने वाले फल के संबंध में विस्तृत संवाद होते हैं।

आरंभ में रावण वेदवती को अपने पैसों से प्रभावित करने का व्यर्थ प्रयास करते है किंतु रावण को जल्दी इस बात का एहसास होते हैं कि वह इन प्रलोभनों में पड़ने वाली स्त्री नहीं थी। अंत में रावण वेदवती की दिव्यता के समक्ष समर्पित हो जाते हैं।

कन्याकुमारी रावण को यह एहसास दिलाती है कि उनकी नियति सप्त सिंधु का रक्षक बनने के लिए है और जब तक यह स्वीकार नहीं करते तब तक वह कभी संतुष्ट नहीं होंगे। वह रावण को समझती है कि उनकी और भगवान रुद्र के नाम का अर्थ समान है और सप्त सिंधु की वर्तमान स्थिति के परिवर्तन लाने की क्षमता रावण में मौजूद है।

वेदवती खुद का उदाहरण देते हुए कहती है कि उसकी हृदय में यह परिवर्तन लाने की इच्छा है किंतु वह एक छोटी सी जगह तक सीमित है । किंतु रावण की पहुँच पूरे सप्त सिंधु में फैले हुए हैं अगर उनमें किसी चीज़ की कमी है तो वह है सही इरादे की।

रावण वेदवती से बहुत प्रेम करते थे इसीलिए उनकी बात भी बहुत जल्दी मान लेते हैं । जनता के जीवन बेहतरीन बनाने के लिए पचास हज़ार सोने के सिक्के दान में देकर फलाई और अच्छे कर्मों के रास्ते पर रावण अपनी यात्रा शुरू कर लेते हैं । रावण वेदवती की पैर छूते हैं । वह अपने जीवन में पहली बार किसी जीवित व्यक्ति का पैर छू रहे थे । वह इस प्रतिज्ञा के साथ उसे गाँव को छोड़ते हैं कि वह ऐसे व्यक्ति बनेंगे जो अपनी मातृभूमी की खोई हुई गौरव को वापस लेकर आएँगे ।

जब रावण लंका जाने की तैयारी कर रहे थे, कुंभकर्ण उन्हें सूचित करता है कि वेदवदी के जो पचास हज़ार सोने के सिक्के दिए थे वह एक जमींदार के पुत्र सुचिकेश ने छीन लिया था । जब दोनों भाई टोडी में पहुँचे तो उन्होंने वेदवती और उनके पति के मृत शरीर को बेहद हीन रूप में पाए । उन्हें इस बात का भी ज्ञान हो जाता है कि वेदवती और पृथ्वी के शिशु का जन्म हो चुका था किंतु उसे जंगल में फेंका गया था । रावण टूट जाते हैं । उनके मन में जो एक भले व्यक्ति बनने की चाह पैदा हुई थी वह वेदवती के साथ ही मर जाता है । वेदवती की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार सभी लोगों को रावण बेरहमी से मार डालते हैं । वेदवती को बचाने में असमर्थ गाँव वालों को भी रावण मार डालते हैं । सुकर्मण के समेत वेदवदी के चार खातिलों को पकड़ कर उनको रावण बहुत ही दर्दनाक मृत्यु देते हैं । यह जानकर रावण को बहुत दुख हुआ कि वेदवती ने मृत्यु को स्वीकारा किंतु समाज की सेवा के लिए रावण ने जो उन्हें सोने के सिक्के दिए वह उन अपराधियों के हाथ में नहीं जाने दिया । अपनी जान देकर वेदवती ने उन सिक्कों की सुरक्षा की।

रावण वेदवती और पृथ्वी के अंतिम संस्कार करते हैं और शपथ लेते हैं कि वह सप्त सिंधु को बर्बाद कर देंगे । वेदवती जैसे देवी के साथ जो बर्ताव हुआ, उसके बाद में सप्त सिंधु को क्षमा करने के लिए वे तैयार नहीं होते । हालांकि रावण को बुराई के प्रतिक के रूप में चित्रित किया जाता है, हम यह देख सकते हैं की भलाई के रास्ते पर चलने की चाह रखने वाले रावण को नियति ने भी धोखा दे दिया था ।

कई साल बीत जाते है । विभीषण और शूर्पणका का लंका से भारत की पश्चिमी भाग से सालसेट के लिए निकलते हैं । सीता के स्वयंवर में रावण को हुई अपमान और मिथिला में

हुई हार के बाद रावण सीता और राम पर बदला लेने की योजना बना रहे थे । इसके चलते विभीषण और शूर्पणका को पंचवटी भेजते हैं । यह दोनों राम, सीता, लक्ष्मण और मलयपुत्रों की सेना से मिलते हैं । किंतु सीता को अपहरण करने की योजना असफल हो जाता है । हाथापाई में लक्ष्मण शूर्पणका की नाक को चोट पहुँचाता है । लड़ाई ज्यादा बढ़ने से रोकते हुए विभीषण शूर्पणका और सैनिक को लेकर वापस लंका चले जाते हैं ।

अपनी बहन शूर्पणका को हुई अपमान के बदले को बहाना बनाकर, पुष्पक विमान में कुंभकर्ण और कुछ सैनिक को लेकर रावण पंचवटी की ओर प्रस्थान करते हैं । रावण के भरोसेमंद गुप्तचर समीची, सीता और उनकी रक्षक को ढूँढ निकालती है । जैसे ही सीता एक मलयपुत्र के साथ जड़ी बूटियों का इंतजाम करने के लिए अकेली जाती है तभी लंका की सेना उन पर आक्रमण करते हैं । सीता अपनी कौशलता से लंका के सैनिक को मार गिराती है । किंतु वे लोग जटायू को पकड़ते हैं और उसकी जान बचाने के लिए सीता को हार माननी पड़ती है । जैसे ही सीता की घुटने ज़मीन पर ठेक जाती है, एक लंका की एक सैनिक आगे आकर एक नीले रंग के पदार्थ को नीम के पत्ते में लगाते हैं और सीता की नाक में रखकर उन्हें बेहोश कराता है । बेहोश हुई सीता को पुष्पक विमान में डालकर लंका के लिए सभी प्रस्थान होते हैं । जीवन में पहली बार रावण और कुंभकर्ण सीता को देखते हैं, मिथिला की योद्धा, राजकुमारी, राम की पत्नी, मलयपुत्र की विष्णु सीता ! रावण को अपनी आँखों पर यकीन नहीं होते । उनके साँस थम जाते हैं । वह सीता को एकटक ताकते रह जाते है कुंभकर्ण भी अपने भाई और सीता को देखते रह गये है ।

उपन्यास के अंत में इस बात का खुलासा होता है कि विश्वामित्र को सारी घटनाओं के संबंध में पहले से ज्ञान होते हैं जिसके अनुसार वह पूरी योजना बनाते हैं । सीता को विष्णु के पद देना, राम से उनकी विवाह कराना, असुरस्त्र का प्रयोग करने के लिए राम को विवश करना, यह सभी एक षड्यंत्र का हिस्सा था । सीता के अपहरण भी अपेक्षित थी । उन्हें इस बात का यकीन था कि सीता वेदवदी की तरह दिखने वाली उनकी पुत्री होने के कारण रावण सीता को चोट या नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।

4.1.3 लंका का युद्ध : –

राम कथा श्रृंखला की यह चतुर्थ उपन्यास में राम–रावण युद्ध का चित्रण हुआ है । उपन्यास की प्रारंभ रावण का युद्ध भूमि में अंतिम साँस लेते हुए होता हैं । पूर्व दीप्ति में कथा वहाँ से शुरु होती है जहाँ रुकी हुई थी । सीता की अपहरण करने के बाद उनकी चेहरा

देखकर रावण दंग रह जाते हैं क्योंकि उनका चेहरा रावण की देवी और उनकी प्रेमिका वेदवती से मिलती थी अर्थात सीता वेदवती और उनके पती पृथ्वी की पुत्री थी ।

रावण सीता को उनकी जन्मदाताओं के बारे में बताते हैं तो सीता रोने लगती है । रावण भी अपने देवी के बारे में बताते हुए फूट पड़ते हैं । रावण सीता से धर्म के लिए युद्ध करने की माँग करते हैं । रावण यह जानते थे कि यह सभी विश्वामित्र द्वारा बनाए गए चाल है ताकि सीता की हाथों रावण की मृत्यु हो और सीता को भारत की विष्णु के पद में प्रतिष्ठित कर सके । जब रावण सीता को देखते हैं तो उन्हें लगता है कि उनका जन्मोद्देश्य पूर्ण हुआ है । राम–सीता के इस महागाथा में उनको भारतीयों के समक्ष नेता के रूप में प्रतिष्ठित करना हो तो रावण को खुद की बलि चढ़ाने होगी उन्हें खलनायक की किरदार निभाते हैं युद्ध में पराजित होना होगा ताकि राम–सीता भारतवर्ष की विष्णु कहलाएँगे और हजारों साल जनता की स्मृतियों में भी जीवित रहेंगे । वे जानते थे कि जब तक यह समाज राम और सीता को याद रखेंगे तब तक उनकी ज़हन में एक नकारात्मक पत्र के रूप में रावण भी जीवित रहेंगे। “मैं स्वयं को नष्ट होने दे सकता हूं ताकि राम और सीता की किंवदंती उभर सके और जब तक संसार आप दोनों को याद रखेगा, तब तक वो मुझे भी याद रखेगा। मैं भी अमर हो जाऊँगा ।”[13]

उधर राम और लक्ष्मण सेना को इकट्ठा करके लंका में रावण के साथ युद्ध करने की योजना बनाते हैं । वे किष्किंधा के राजा बालि से उनकी गजवाहिनी माँगते हैं । किष्किंधा की राजा इस माँग के बदले यह शर्त रखते हैं कि किष्किंधा की सैना और गजवाहिनी के बदले राम को उनके साथ द्वंद युद्ध करने होंगे । बालि कहता है । राम को विवश होकर इस शर्त को स्वीकार करने पड़ते हैं ।

द्वंद युद्ध में बालि मर जाता है । बालि राम के वार से एक प्रशिक्षित योद्धा के प्रकार नहीं हटता । वह उस वार को स्वीकार करके वीर मृत्यु वरण करता है । इसी बीच विश्वामित्र शत्रुता भुला कर राम को रावण के साथ युद्ध के लिए आवश्यक वायुपुत्रों की सैना और गजवाहिनी प्रदान करने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

राम के समक्ष लंका जाने के लिए पुल बनाने की समस्या सबसे बड़ी थी । सहस्त्र सेना, घोड़े और हाथियों को लेकर जाने के लिए एक शक्तिशाली पुल बनाने की आवश्यकता

---

[13] अमीश त्रिपाठी – लंका का युद्ध – पृ स – 58

थी । शत्रुघन राम की सहायता के लिए आगे आता है । शत्रुघ्न एक प्रबल वास्तुशिल्पी होने के कारण ही मानव इतिहास के सबसे लंबा पुल 'धनुष्कोटी सेतु' बनाने का निर्णय लेता है । इस पुल को बनाने के लिए उन्हें अनोखे प्रकार की लकड़ी और पत्थर की आवश्यकता थी । उत्तर पूर्व वर्षा ऋतु की पहली माह को ही पुल बनाने का काम शुरू हो जाता है ।

रावण का छोटा भाई विभीषण राम और उनकी सेना का रावण के साथ युद्ध में सहायता करने का वचन देता है । बदले में वह लंका के राजा के सिंहासन चाहता था । राम की मोहर लगी हुई घोषणा पत्र देकर वे विभीषण को यह वचन देते हैं ।

विभीषण ओंगईअहरा के नदी में स्थित भव्य दुर्ग के मानचित्र और रूपरेखा भरत को देते हैं । रावण, उनके सेनापति घुम्राक्षु के जानकारी के बिना एक और सुरंग बना लेते हैं जिसका ज्ञान केवल विभीषण को था । लक्ष्मण और अयोध्या की सेना ओंगईअहरा के उस सुरंग पर पहुँच जाते हैं जहाँ लंका की सेना दूसरी मार्ग पर उनकी प्रतीक्षा कर रहे होते हैं । लक्ष्मण और लंका की सेनापति घुम्राक्षु के बीच द्वंद्व युद्ध होता है । दोनों प्रबल योद्धा के बीच काफी संकीर्ण युद्ध होता है जिसमें घुम्राक्षु को मारकर लक्ष्मण जीत जाता है ।

मारीच और इंद्रजीत अयोध्या के क्षीरक नामक एक सैनिक को बंदी बनाते हैं । उससे शारीरिक रूप से पीड़ित करते हैं ताकि वह अयोध्या के सेना का कोई रहस्य का उजागर करें । किंतु वह अपनी सेना के संबंध में कुछ नहीं कहता । इंद्रजीत समीची को बुलाता है और समीची उसे 'चालाक चींटी' नामक एक चींटी के जात से कटवाती है । वह सैनिक दर्द में तड़पता हुआ लक्ष्मण की सेना से पृथक राम की मुख्या सेना का समुद्र के पार पुल बना कर पश्चिम से आनेवाली रहस्य इन्द्रजीत को बताता है जिसे सुनकर वह दंग रह जाता है ।

इंद्रजीत राम की सेने का पश्चिम से आने की खबर सुनकर सिगारिया वापस चला जाता है । राम की सेना लंका पहुँच जाती है किंतु रावण की सेना सिगारिया के दुर्ग के अंदर छुपे बैठे थे । इसकी दीवार अभेद्य होने के कारण उन्हें अंदर जाकर पराजित करना मुमकिन नहीं था । उन सैनिकों को बाहर आने के लिए विवश करना पड़ेगा ताकि नदी तट में उनको पराजित कर सके । इसके लिए हनुमान दुर्ग की चारों ओर जो गेहूं के खेत है उसे जलाने का सुझाव देते हैं । अनाज की दुर्लभ अवस्था में वे बाहर निकलेंगे और तभी उन पर हमला करने की योजना बनाते हैं । हनुमान की रणनीति सफल हो जाता है और लंका की सेना को परास्त करके लंका की सीमा को पार कर वे अंदर चले जाते हैं ।

लंका और अयोध्या के बीच युद्ध शुरू हो जाता है दोनों सेना और उनकी सेना नायक युद्ध जीतने का भरपूर प्रयास करते हैं। युद्ध का प्रथम दिन अयोध्या की सेना की पहली वार से युद्ध प्रारंभ हो जाती है। अयोध्याई सेने के पास गजवाहिनी होने के कारण लंका की सेने को भारी क्षती का सामना करना पड़ता है। युद्ध के पहले दिन अयोध्या ही सेना की एक हाथी और अयोध्या की गजवाहिनी के कारण कुंभकर्ण और मारीच की मृत्यु हो जाती है।

कुंभकर्ण की मृत्यु से सभी को दुख पहुँचता है। कुंभकर्ण और मारीच के मृत शरीर को राज्य की चिकित्सालय के हिमकक्ष में रखा जाता है। रावण सीता से युद्ध की समाप्त होने के पश्चात रावण के साथ कुंभकर्ण और मारीच की मृत शरीर को उनके गाँव सिनौली में दफनाने का अनुरोध करते हैं और सीता मान जाती है।

युद्ध के द्वितीय दिन इंद्रजीत पुष्पक विमान के साथ युद्ध करता है। वह अयोध्याई सेना की शक्ति, गजवाहिनी को नाश करने का निर्णय करता है। अकंपन पुष्पक विमान को चलाता है और उसकी उसकी द्वार से इंद्रजीत और लंका का एक सैनिक अयोध्याई सेना और गजवाहिनी पर बाण की वर्षा करते हैं। इंद्रजीत लक्ष्मण पर विष लगा हुआ का बाण चलाता है और वह बुरी तरह से घायल हो जाता है। यह देखकर भरत क्रोधित होकर इंद्रजीत की ओर भाला फेंकता है वह भाला इंद्रजीत की छाती को चीरकर बाहर निकलता है और इंद्रजीत मर जाता है। लक्ष्मण को तभी चिकित्सक के पास ले जाते हैं और पुष्पक विमान से हिमालय से लाई जड़ी बूटियाँ से ज़हर को लक्ष्मण की पूरी शरीर से फैलने से रोकता है।

इंद्रजीत की मृत शरीर को देखकर रावण फूट-फूट कर रोते हैं। अपनी मृत्यु से पहले अपनी मामा, भाई और पुत्र के मृत शरीर को उन्होंने देखा और इस भोज को सीने में लेकर इंद्रजीत के मृत शरीर के सामने टूट पड़े। रावण इस युद्ध को अंत करना चाहते थे और अपने भाई और पुत्र की पास जल्दी पहुँचना चाहते थे। वह राम का 'इंद्र का द्वंद' अथवा मृत्यु होने तक लड़ाई करने के लिए ललकारते हैं। राम इस चुनौती को स्वीकार करते हैं।

राम एक प्रतिभाशाली धनुर्धर थे, इसके बावजूद वे द्वंद के लिए जब उन्हें अस्त्र चुनना था तो वह रावण की घायल बाह को ध्यान में रखते हुए तलवार को चुनते हैं। राम निष्पक्ष और शंकारहित रूप से रावण को पराजय करना चाहते थे और रावण भी इसे स्वीकार करते हैं।

राम और रावण के बीच द्वंद युद्ध शुरू हो जाता है। साठ साल की उम्र में भी रावण पूरी शक्ति के साथ लड़ते हैं किंतु राम से जीतना मुमकिन नहीं था। राम अपने मौके को न

गवाते हुए तेज़ी से रावण के पेट में तलवार घुसाते हैं और रावण बुरी तरह से घायल हो जाते हैं। मृत्यु से लड़ रही रावण से राम पूछते हैं कि – "राजा रावण, क्या आप अपनी तलवार पकड़ना चाहेंगे ?' 'नहीं... मैं जो चाहता हूं उसे पकड़े हुए हूँ । वो एकमात्र वस्तु जिसकी मुझे सच में आवश्यकता है... वेदवती का हाथ...।"[14] अंतिम पलों में रावण वेदवती की उंगली की हड्डी जो उन्होंने अपने गले में पहने हुए थे उसे पकड़र मृत्यु का वरण करते हैं।

राम सीता से अशोक वाटिका में जाकर मिलते हैं। दोनों प्रेमी एक दूसरे के वियोग में महीने व्यतीत किए थे। राम को देखते ही सीता उनकी आरती उतारती है और दोनों आलिंगन करते हैं। मृत्यु से पहले रावण ने कई सारे माँग रखी थी जो सभी राम पूर्ण करते हैं, जिसमें एक था वेद्यनाथ में एक चिकित्सालय शुरु करना। राम वहाँ वेदवती के नाम से एक चिकित्सालय का निर्माण आरंभ करते हैं। रावण की माँगों में एक माँग ने उन्हें दुविधा में डाल दिया था और वह है विभीषण को लंका के राजा ना बनाने की क्योंकि राम ने विभीषण को लंका के सिंहासन का वचन पहले ही दे चुके थे। भरत इस बात का समाधान निकालता है। वह लंका का विभाजन करते हैं जिसके कारण लंका सैगरिया और द्वीप के पश्चिमी तट तक सीमित हो जाती है। वे विभीषण को इस काटे–चाटे क्षेत्र का राजा बना देते हैं।

राम अपने भाइयों और पत्नी के साथ अयोध्या के लिए निकल जाते हैं और उनके साथ मंदोदरी और वशिष्ठ भी थे। अंत में वशिष्ठ पुष्पक विमान में बैठकर एक 'पवित्र जीवन का देश – मेलुहा' की उत्थान करने की बात करते हुए उपन्यास समाप्त हो जाता है।

4.2 अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण

अमीश त्रिपाठी के अनुसार मिथक बीती हुई अतीत की अव्यवस्थित स्मृतियाँ है, मिट्टी के ढेर और अज्ञानता के नीचे दबा हुआ एक अतीत। पौराणिक कथाएँ और इतिहास का उपयोग करके, आमीश ने भूत काल में यात्रा की और भविष्य के अंदर छिपे उसकी संभावनाओं को खोजने का प्रयत्न किया। चार वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, और पुराण सभी में पौराणिक कथाएँ हैं और उनकी विशेषताएँ सैकड़ों वर्षों तक बरकरार रही हैं, उनके बचे हुए टुकड़ों को आज भी सक्रिय दिखाया जा रहा है।

अमीश जी ने समाज को एक तीखे दर्शक के रूप में, लोगों की धार्मिक पाठों, पौराणिक कथाओं, और उनके समकालिक व्याख्याओं में रुचि को ध्यान से देखा है । उनकी कथा कहने

---

[14] अमीश त्रिपाठी – लंका का युद्ध – पृ स – 463

की शैली पठकों में मनोरंजन प्रदान करते है और साथ ही उनकी कल्पना शक्ति को आसमान को चूने की उद्देश्य से बनाया है । वर्तमान काल में पौराणिक कथाओं की साहित्य के संदर्भ में अध्ययन का समाज के कई महत्वपूर्ण पहलुओं को साथ तुलना करने में ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जैसे कि विचारधारा, संस्कृति, पौराणिक कथा पुनः सृजन, भाषा का उपयोग और कला, क्योंकि कुछ प्राचीन संस्कृत साहित्य में कुछ कहानियाँ एक ही मार्ग को साझा करती हैं । इसमें अध्ययन का विषय यह है कि कैसे एक लेखक ने समकालीन सभ्यता के पूर्व उपलब्ध किए जाने वाले कथा को कैसे ढूँढे और प्रस्तुत किये। विभिन्न पौराणिक कथाओं को विभिन्न संदर्भों और स्थितियों में अनुकूलित की गई हैं । इस शोध के अध्ययन में अमिश त्रिपाठी की कुछ पुस्तकों में पौराणिक कथा के उपयोग पर आधारित है । इस उद्देश्य में उनकी राम कथा श्रृंखला – राम इक्षवाकु के वंशज, सीता मिथिला की योद्धा, और रावण आर्यवर्त की शत्रु और लंका का युद्ध का चयन किया गया है । अपनी पुस्तकों में, अमिश त्रिपाठी प्राचीन विचार को समकालीन कथा–रचना विधियों का उपयोग करके जोड़ते हैं ।

अमिश त्रिपाठी पौराणिक कथाओं का सर्जनात्मक प्रयोग करके साहित्य के लोकप्रिय क्षेत्रों में अपने उपन्यासों को निरूपित करते है और कथा को आगे बढ़ाते हैं । वह पौराणिक घटनाओं को वास्तविकता से पुष्टि करने का प्रयास करते हैं ताकि यह आधुनिक तर्क और तर्कशक्ति के साथ अनुकूल हो सके। उनका प्रयास उन घटनाओं, पात्रों और उनके कर्मों को तार्किक व्याख्या प्रदान करना है । स्पष्ट लेखन शैली और विस्तृत विवरण का सहारा लेते हुए वे काल्पनिक कहानियों का पुनः लेखन करते हैं और इन्हे ऐतिहासिक संदर्भों में स्थान दिलाते हैं । उन्होंने एक अनूठे दृष्टिकोण से भारतीय पौराणिक पात्रों के बारे में लिखने का निर्णय लिया है । उनकी मिथकीय दृष्टिकोण केवल सृजनात्मक ही नहीं बल्कि तर्कसंगत भी है।

यद्यपि अमिश की राम कथा में पूर्णरूप से भगवान राम की मौलिक पौराणिक कथाओं से बड़ी मात्रा में भिन्नता है लेकिन अमिश ने इस नई कहानी में अधिकांश पौराणिक कथाओं को नवीन रूप में प्रस्तुत की हैं । अमीश त्रिपाठी भारत के भूगोल को बदलती इतिहास के धरातल में देखा हैं । कहानी के दौरान उन्होंने भारत की अतीत के गौरव, संस्कृति, सभ्यता के साथ भारत की विशाल भूभाग को राष्ट्रियता से चित्रित किया गया है । समानता का दिव्य अवधारणा उसके दर्शन के आधार है । उसने कल्पित भारतीय संस्कृति को उसे विश्व की सर्वोत्तम सभ्यताओं की श्रेणी में उच्चाधिकृत करने के लिए आदर्श बनाया है ।

4.2.1 अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रंखला में मिथक

अमीश त्रिपाठी को भारत की सबसे प्रसिद्ध कथा रामायण को पुनर्चित्रित करके उसे विशव भर में प्रसिद्ध कराने का श्रेय प्राप्त है । उन्होंने रामायण का अपना एक संस्करण तैयार किया है जिससे उन्हें आधुनिक समय के कई समस्याओं को उठाने की आज़ादी मिली। अमीश जी की राम कथा में कुछ परिवर्तन ज़रूर हैं, लेकिन उन्होंने मुख्य कथानक में कोई परिवर्तन नहीं किया और उन्हें वैसे ही बनाए रखा है ।

इस राम कथा श्रृंखला में तीन प्रमुख पात्र हैं– राम, सीता, और रावण। अमिश त्रिपाठी ने इन पात्रों को ऐसे प्रस्तुत किया है कि उनका प्रारंभिक जीवन उनके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण होता है । वे तीनों पात्रों, किसी न किसी तरीके से अपने हर कदम में कठिनाइयों का सामना करता है लेकिन यह देखने लायक है कि वे जीवन की हर मोड़ में कैसे पथ चुनते हैं ।

राम, उदाहरणार्थ, अपने कठिन प्रारंभ का सकारात्मक रूप से संबोधित करते हैं और एक आदर्श समाज बनाने का प्रयास करते हैं । वहीं, सीता अपने माता और गुरु विश्वामित्र द्वारा सौंपी गई कर्तव्यों को अपने समझदारी और विवेक से पूरा करने का प्रयास करती हैं । दूसरी तरफ रावण अपनी परिस्थितियों का बड़ा क्रोधपूर्ण तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं और अंत में सबसे डरावना खलनायक बन जाते हैं। वेदवती के रूप में उन्हें दूसरा मौका मिलता है, जो भाग्य उनसे चीन लेता है।

रामायण की कहानी उस प्रसंग से शुरू होती है जिसमें सीता को रावण ने अपहरण किया है। यह राम कथा श्रृंखला की पहली किताब है और हमें यह पता होता है कि यह कहानी आगे कैसे बढ़ेगी। किंतु अमीश त्रिपाठी ने इसकी कथा पूरी तरह से अनूठा बनाया है । अमीश जी ने राम को एक सामान्य मानव के रूप में पेश किया है, भगवान के रूप में नहीं। इसीलिए इस राम कथा को हमें पौराणिक कथा के रूप में नहीं बल्कि एक आधुनिक लेखन कार्य के रूप में इसकी अध्ययन करने की अवश्यकता हैं । अमीश जी ने जिन घटनाओं की अपनी उपन्यास में चर्चा किया है वे सभी घटनाएँ आज की दुनिया में हो चुकी हैं । उन्होंने रामायण में हाशियों पर रहनेवाली महिला पात्रों को भी आवाज़ दिया है। कैकेयी को दशरथ की रक्षिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे उन पारंपरिक विचारधाराओं पर प्रश्न किया जो यह मानते है कि केवल एक पुरुष ही अपनी पत्नी की रक्षा कर सकता है क्योंकि वे शारीरीक तौर पर मज़बूत होते हैं। उन्होंने भरत की प्रेमिका राधिका नामक

पात्र की सर्जना किया जिसे अपने परिवार के लिए अपने प्यार को त्याग करना पड़ता है जो उन स्त्रीयों को प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी जीवन के साथ समझोता करके जीते हैं । इसके अतिरिक्त उन्होंने मंथरा की बेटी रोशनी को प्रस्तुत किया है ताकि वह यह दिखा सकें कि आज के समाज में मर्द किस प्रकार एक महिला को उसकी उच्चता की दिशा में आगे बढ़ने पर रोकता है और उसे दमन करता है ।

अमीश जी ने सीता को मिथिला की प्रधान मंत्री के रूप में चित्रित किया है, मिथिला की राजकुमारी के रूप में नहीं। वे राम कथा को सीता की दृष्टिकोण से भी बयां करते हैं जो इस श्रंखला की दूसरी उपन्यास है, 'सीता: मिथिला की योद्धा', जहाँ राम एक सहायक पात्र की भूमिका में निभाया है । पितृसत्तात्मक समाज में जहाँ महिलाओं की आवाज़ बहुत कम सुनायी देती हैं, अमीश त्रिपाठी अपनी उपन्यास के माध्यम से उनको आवाज़ देने का प्रयास करते हैं और सामाजिक परिवर्तन का उम्मीद जगाते हैं ।

अमीश त्रिपाठी की सीता पुरुषों से अधिक क्षमताओं का प्रदर्शन करती है । वे उग्र मौसम के बावजूद भी मलयुपत्रों के सैनिक मक्रांत के साथ केले के पत्तों को काटने जाती है । उनका सामना सौ से अधिक लंका योद्धाओं के साथ होती है जिसमें रावण और उनके भाई कुम्भकर्ण भी शामिल थे। उनके छल-कपट के तरीके भी बहुत होशियार हैं, जिनसे लंका की सेना को यह धोखा देने में मदद मिलती है कि वह क्षेत्र में अनेक सारे प्रतिद्वंद्वियों की तरह महसूस करें। उनकी युद्ध कौशलता इतनी प्रबल है कि वह लंका की सेने के मन में यह वहम पैदा करती है कि वे असंख्य प्रतिद्वंद्वीयों के साथ युद्ध कर रहे थे जब की उनकी विपक्षि केवल एक स्त्री थी।

अमीश जी की रचना में सीता का चित्रण एक चतुर व्यक्तित्ववाली शासक और प्रबल योद्धा के रूप में हुआ है । उनमें गुप्तचरों की पहचान करने की अद्वितीय क्षमता है । जब राम पहली बार मिथिला में उनसे मिलते हैं, तो वह बाज़ार में एक छोटा बच्चा जिसने चोरी की, उसे भीड़ की आक्रोश से बचाने की प्रयत्न कर रही थी। एक धनी व्यापार विजय, भीड़ को उस बच्चे की खिलाफ उकसाने का प्रयास करता है तो उन्होंने क्रोधित भीड़ से केवल उस बच्चे को ही नहीं बल्कि अपनी रक्षा भी की। राम ने सीता के अत्युत्तम साहस और युद्ध क्षमता को देखकर उनके आगो आदर के साथ अपना सिर झुकाते हैं ।

अमीश जी के सभी लेखों में पात्रों के बीच दार्शानिक संवाद एवं दरबारी चर्चाओं की अंश होता है । इस राम कथा में लेखक सामाजिक न्याय के महत्व की जाँच करते हैं ।

व्यक्ति किस प्रकार से विधि या धर्म का उपयोग कर सकता है ताकि 'मत्स्यान्याय' या मत्स्य के नियम, जहाँ बड़े छोटों को खा जाते हैं, उसको रोक सकें? यह एक मौलिक विषय है जो कई प्राचीन भारतीय लेखों को जीवंत करता है, जैसे कि वाल्मीकि की रामायण। अमीश त्रिपाठी अपने तर्कों को आधुनिक दृष्टिकोण में देखते हैं । उदाहरण के लिए, हम देखते हैं कि राम के कठिन विधि से एक बलात्कारी जो एक किशोरी लडका है, उसे सज़ा से बचाते हैं। लेकिन फिर भरत के हाथों उसका भयानक अंत होता है । यह दिल्ली में घटित घटना का एक स्पष्ट संदर्भ है, जिसे ज्यादातर पाठक इस संघर्ष को पहचान पाएँगें।

वाल्मीकि रामायण और अमीश जी के रामायण का सबसे बड़ा अंतर है कि कैसे राम, दशरथ और अयोध्यावासियों के लिए अप्रिय है। उनके पिता राजा दशरथ, राम को अशुभ मानते हैं और उनकी सभी दुर्भाग्यों का कारण उसी को मानते हैं । कहानी के ऐतिहासिक आधार को एक अलग तरीके से रखा गया है । हम ऐसे कई पात्रों के साथ कहानी में आगे बढ़ते हैं जो हमें चौंकाते हैं । उदाहरण के लिए अमीश जी के रामायण में मंथरा एक दरिद्र सेविका नहीं, बल्कि वह अयोध्या की सबसे धनी व्यापारिक स्त्री के रूप में दिखाया गया है ।

कन्याकुमारी और उससे संबंधित मिथक जो इस राम कथा में मौजूद है उसका पात्रों पर गहरा प्रभाव है । सुनैना और जनक, कन्याकुमारी से मिलने के असफल प्रयास के बाद वापस लौट रहे थे। वे गण्डकी नदी के मार्ग को बदलने की अनुमति लेने के लिए आए थे जो एक बड़े भूकंप के बाद विचलित हो गया था। घर के रास्ते में सुनैना भेड़ियों की झुंड से लड़ रही गिद्ध को देखती है जो एक शिशु की रक्षा कर रहा था। वह शिशु सीता थी। वाल्मीकि रामायण से भिन्न खेत जोतते वक्त सीता उन्हें नहीं मिलती। उन्होंने इस बच्ची को अपनाया और उसे एक योद्धा और कुशल प्रशासक के रूप में प्रशिक्षित किया। इस पर ध्यान देने की बात है कि सीता खुद एक पूर्व-कन्याकुमारी की बेटी है, जिन्हें बेरहमी से मार दी थी और हत्यारे ने सीता को जंगल में फेंक दिया था और जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ दिया गया था, जिसे सुनैना ने बचाया।

कन्याकुमारियाँ इस कहानी में आध्यात्मिक प्रभाव नहीं डालती हैं, लेकिन वे कहानी के प्रमुख पात्रों के जीवन पर प्रभाव डालती हैं । उसी तरह रावण भी वदवती के प्रति प्रभावित हो जाता है, जिनसे उन्होंने अपने पिता के आश्रम में मिले थे। कन्याकुमारी के कारण रावण अपने जीवन की दिशा को दो बार सुधारने का प्रयास करते हैं; पहली बार जब रावण उन्हें बाल्य काल में मिलते है और अपनी ज़िद्दी मनोभाव को छोड़ देते है किंतु

जब उसने पिता के द्वारा अपने छोटे भाई को मारने के आदेश के बारे में सुनता है तो रावण का क्रुर और जंगली घिनौने व्यवहार वापस लौटता है। यह स्वाभाव उन्हें एक खलनायक बना दिया और साथ ही एक उत्कृष्ट व्यापारी भी।

दूसरी बार जब वह उनसे मिलते हैं और उन्हें लंका में रहने के लिए कहते हैं। किंतु उनकी दिव्यता में खो जाते हैं और वह एक ऐसे श्रेष्ठ व्यक्ति बन जाते हैं जो सप्त–सिंधु के लोगों के उन्नति के लिए जीने का निर्णय लेते हैं। लेकिन यहाँ भी भाग्य उनके साथ खिलवाड़ करती है और वेदवती की हत्या हो जाती है । वेदवती की मृत्यु ने रावण में उनकी प्रतिशोध की भावना को ज्वलंत किया और उसने उस भूमि का विनाश किया जिसने उसके बचपन के प्यार को खून कर दिया, वह एक व्यक्ति जिसके समक्ष रावण के सिर झुकते थे। इस प्रकार यह निष्कर्षित किया जा सकता है कि इस कथा की आधार कन्याकुमारी की कथा पर निर्भर है।

मलयपुत्र जाति छठे विष्णु भगवान परशुराम के वंशज है ठीक वैसे ही जैसे कि भगवान रुद्र के वंशज है वायुपुत्र जाति। उनका मुख्य उद्देश्य है अगले विष्णु के लिए मार्ग प्रशस्त करना जो एक नए जीवन की स्थापना करेंगे। साथ ही उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे विपद में महादेव की मदद करे जब वह बुराई को नष्ट करने के लिए उठते हैं ।

मलयपुत्र जाति के मुख्य गुरु विश्वामित्र है और उन्होंने सीता की निरीक्षण करने के पश्चात उन्हें भारत के विष्णु के पद के लिए चुना। यह पद उन व्यक्तियों को दिया जाता है जो लोगों को नए जीवन की राह दिखाते है, जो अच्छाई की प्रचारक और धर्म के संरक्षक है । विश्वामित्र से प्राप्त औषदी के कारण ही रावण जीवित रहते हैं। विश्वामित्र यह योजना बनाते है कि वह रावण को जीवित रखेंगे ताकि उनके द्वारा चुने गए विष्णु उसे मार सके और सप्त–सिंधु को इस राक्षस राजा लंका की पीड़ा से मुक्ति प्रदान कर सके।

विश्वामित्र के वास्तविक शत्रुता वशिष्ठ के साथ है और उनके संभावित विष्णु राम को पद की प्रतिस्पर्धा से हटाने के लिए, वे राम से दैवी अस्त्र चलाते है ताकी उस अस्त्र को प्रयोग करने की सज़ा उन्हे मिले अर्थात वनवास। किंतु यह योजना असफल रही और क्योंकि सीता भी राम के साथ वन में जाती है । दैवी अस्त्र चलाने के प्रक्रिया में राम ने एक रक्षक के रूप में प्रसिद्धि कमाई और सप्त–सिंधु के लोगों में आशा पैदा होती है कि वह राष्ट्र की महिमा को वापस ला सकते हैं । इस प्रकार मलपुत्र भी इस राम कथा में महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाते हैं। वे केवल इस कथा के नायक के साथ ही नहीं बल्कि अपने लाभ के लिए प्रतिपक्षी रावण

का भी सहायता करते है ताकि वे सीता को विष्णु बना सके। महर्षि विश्वामित्र अरिष्टनेमि को उचित समय पर रावण को मारने की अपनी महायोजना के बारे में बताते हैं ।

अमीश जी के राम कथा श्रंखला को सही जीवनशैली स्थापित करने और समाज को संतुलित बनाने की खोज में एक यात्रा मानना उचित होगा। यह विष्णु का प्रमुख कार्य भी है कि वह लोगों को नए जीवन की राह दिखाए और समाज को नया रूप दे सके। दशरथ के शासन के समय समाजिक पतन की पीछे का कारण यह है कि व्यापारी वर्ग को घृणा की दृष्टि से देखा गया था, और सभी महत्व और विशेषाधिकार केवल योद्धाओं को ही प्रदान किए गए थे, जिससे आखिरकार विनाश हो गया था।

एक समाज जहाँ एक वर्ग को दूसरे से बेहतर या ऊपर माना जाता है, वहाँ आमतौर पर आपसी असंतुलन होने की संभावना है जैसे कि दशरथ के शासन के समय आयोध्या में हुआ। दशरथ ने योद्धाओं को व्यापारियों के समक्ष प्राथमिकता देने का निर्णय लिया जिससे विभिन्न व्यापार और व्यवसायों को दबाया गया। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्र भीतर से कमज़ोर पड़ गयी। रावण ने इस मौका का फायदा उठाया और दशरथ को युद्ध में हराया। एक बार जब वे युद्ध के मैदान में हार गए तो राष्ट्र में संतुलन बनाए रखने के लिए कुछ भी नहीं किया और आयोध्या को भयंकर पतन का सामना करना पड़ता है ।

सुनैना सीता को राज्य प्रशासन के बारे में सिखाती है । वह उसे यह कहती हैं कि धनी लोगों पर शासन करना और उन्हें संभालना आसान होता है क्योंकि वे अपने लालच को तृप्त करने के लिए जीते है । उन्हें लालच ही नियंत्रित भी करता है । दूसरी ओर गरीबों का नियंत्रण करना अधिक चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि वे जीवन की मूलभूत अवश्यकताओ के लिए बेताब है । सुनैना आगे बताती है कि ईमानदारी का धनी या गरीब होने से कोई लेना-देना नहीं होता, यह एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का गुण है । यह देखा जाता है कि जो कोई भी जीवन में सब कुछ प्राप्त करता है उसमे और पाने की लालच होता है । हालांकि वह पहले से काफी बेहतर हो सकता है लेकिन सुखों की उपलब्धता इसमे तृप्त रहने के बजाय अक्सर उनकी आकांक्षा को भड़काती है ।

इस राम कथा श्रंखला में शिक्षकों को काफी महत्व दिया है । वे घटनाओं के प्रमुख वाहक होते हैं । इस कथा में दो प्रभावशाली शिक्षक, विश्वामित्र और वशिष्ठ प्रमुख रूप से प्रस्तुत हैं । वे कभी एक ही शिक्षक के छात्र थे, बहुत करीबी दोस्त थे, लेकिन बाद में दुश्मन बन गए। विश्वामित्र सीता को विष्णु के पद के लिए प्रशिक्षित करते हैं, जबकि दूसरी ओर वशिष्ठ राम को उसी के लिए तैयार करते हैं । इनमें से किसी की अधिक पाठ नहीं दिया

गया था और सप्त–सिंधु की महिमा को वापस लाने ही इनका लक्ष्य होता है। किंतु उनके काम करने का तरीका भिन्न होता है। विश्वामित्र का मानना है लक्ष्यपूर्ती के लिए वे कुछ नही कर सकते है। वह अपनी औषधियों के ज़रिए रावण को जीवित रखते हैं ताकि उनके द्वारा चुने विष्णु उसे सही समय पर हरा सके और एक रक्षक का दर्जा प्राप्त कर सके। वहीं वशिष्ठ सीधे रास्ते पर चलते हैं और राम को सभी संभावित परिस्थितियों के लिए तैयार करते हैं। उनके तरीके चाहे जैसे भी हो वह कोई भी एक तथ्य को इनकार नहीं कर सकते कि शिक्षक महत्वपूर्ण शक्ति रखते हैं और अपनी बुद्धि की प्रतिभा के माध्यम से किसी भी राष्ट्र के भविष्य को आकार देने की क्षमता रखते हैं।

इस श्रृंखला के प्रथम दो उपन्यास राम की युवावस्था और उनके सिंहासन तक पहुँचने से संबंधित जटिल राजनीतिक परिदृश्य की कहानी बतायी गयी है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सीता के एक गोद ली हुई पुत्री से प्रधान मंत्री के पद तक की यात्रा पर प्रकाश डाला है, जिसमे उन्हें एक योद्धा और एक देवी दोनों के रूप में उनकी भूमिकाओं का चित्रण किया। अमीश जी की तीसरी उपन्यास में रावण के एक कलाकार से संभवतः सबसे कुख्यात खलनायक बनने की यात्रा का वर्णन किया गया है। यह खंड स्पष्ट रूप से रावण के लंका के सिंहासन पर विराजमान होने तक की कथा है और कैसे उनका भाग्य भगवान राम और देवी सीता की कहानियों के साथ जटिल रूप से जुड़ा हुए थे। जबकि समकालीन संस्कृति में रावण को आमतौर पर बुराई के प्रतीक के रूप में माना जाता है, रावण की चरित्र का मूल वाल्मिकी रामायण में पाए गए अधिक परिष्कृत चित्रण से प्रेरणा लेकर लिखा है।

इस श्रृंखला की चथुर्त उपन्यास 'लंका का युद्ध', युद्ध के इतिहास के रूप में कार्य करती है जिसमें व्यापक इसकी तैयारी, रणनीतिक योजना, भावनात्मक गतिशीलता और पत्रों के बीच के संवेदनशील वार्तालाप शामिल हैं। शीर्षक को सार्थक रखते हुए, यह पुस्तक मुख्य रूप से युद्ध के विषय पर प्रकाश डालती है जिसमें इसके सभी तत्वों को लेखक ने शामिल किया है। इसमें दुर्गों की जटिलताएँ, पुल की स्थापना में शामिल अभियांत्रकी, छिपी हुई सुरंगें जैसे विषयों पर अमीश जी ने विस्तार से लिखा है।

अमीश जी ने रचनात्मक स्वतंत्रता की भरपूर फायदा उठाते हुए पारंपरिक रामायण कथा से भिन्न कई प्रसंग को जोड़ा और हटाया है। राम सीता रावण के जन्म संबंध कथा, नई युद्ध नीति का परिचय, नए पत्रों का परिचय, कई पौराणिक पात्रों के चरित्र में बदलाव, इन पात्रों का एक दूसरे से संबंध जैसे –

- राम और दशरथ के बीच तनाव।

- सीता हनुमान का एक दुसरे से बचपन से ही जान पहचान।
- राम और लक्ष्मण से अधिक राम भरत के बीच का भातृप्रेम।
- हनुमान और कुंभकरण के बीच में मित्रता।
- कुंभकरण और रावण के बीच भातृप्रेम।
- रावण और सीता के जोड़ने वाली एक डोर - वेदवती, जिसके कारण उनके बीच में मित्रता का भाव।

उपयुक्त सभी बिंदु भारतीय पाठकों को अमीश की रामायण को पढ़ते हुए एक नई अनुभव प्रदान करेंगे।

अमीश त्रिपाठी की कथा के आधुनिकीकरण पर विचार करते समय, यह स्पष्ट हो जाता है कि इन कहानियों को व्यावहारिकता और विश्वसनीयता पर ध्यान केंद्रित करके तैयार की गई हैं । पात्रों में दैवीयता नहीं बल्कि मानवीय रूप से चित्रित किया गया है जिससे पाठकों सापेक्षता का एहसास करते हैं । 'पुष्पक विमान' का चित्रण पुराने संस्करणों में पाए जाने वाले जादुई तत्वों के बजाय वैज्ञानिक सिद्धांतों पर निर्भर करता है, जो आज की पीढ़ी को प्रतिग्रहण करने में सरल हो।

लेखक ने राम को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दर्शाया है जो अपनी भावनाओं पर संयमपूर्वक नियंत्रण रखता है । लेखक उनके कार्यों के पीछे की प्रेरणाओं और उसे आकार देने वाली परिस्थितियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। सीता का एक दुर्जेय योद्धा और राजनीतिक शख्सियत में परिवर्तन, प्रेरणा की तलाश करने वाली समकालीन महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक प्रतिनिधित्व के रूप में कार्य करती हैं । इसी तरह, रावण केवल पारंपरिक खलनायक नहीं है, इसके बजाय उन्हें एक दृढ़निश्चयी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो समकालीन व्यापार जगत को प्रेरित कर सकते हैं । जिस तरीके से अमीश त्रिपाठी को भारतीय साहित्य के इतिहास में सबसे सफल लेखक बनाया है, वह कहानी को समसामयिक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता का प्रमाण है।

निष्कर्ष

इस अध्याय में अमीश त्रिपाठी के राम कथा श्रृंखला एवं उनके मिथकीय दृष्टिकोण का चर्चा किया गया है। अमीश जी सभी भारतीयों के बीच इतिहास के प्रति गहरी सराहना को बढ़ावा देने सफल हुए हैं । वह हमारी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत को अधिक गहराई से

जानने के महत्व को रेखांकित करते हैं । भारत दुनिया के सबसे पुराने राष्ट्रों और सभ्यताओं में से एक है, संभवतः सबसे प्राचीन। इसका इतिहास सहस्राब्दियों तक फैला हुआ है । रामायण मूल्यों और जीवन शैली के गहन भंडार का प्रतिनिधित्व करता है । इसकी कथा अविश्वसनीय रूप से समृद्ध और बहुआयामी है जो ज्ञान का खज़ाना पेश करती है। इस पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार और सराहना की जा सकती है और अमीश त्रिपाठी के रामायण इनमे से एक है।